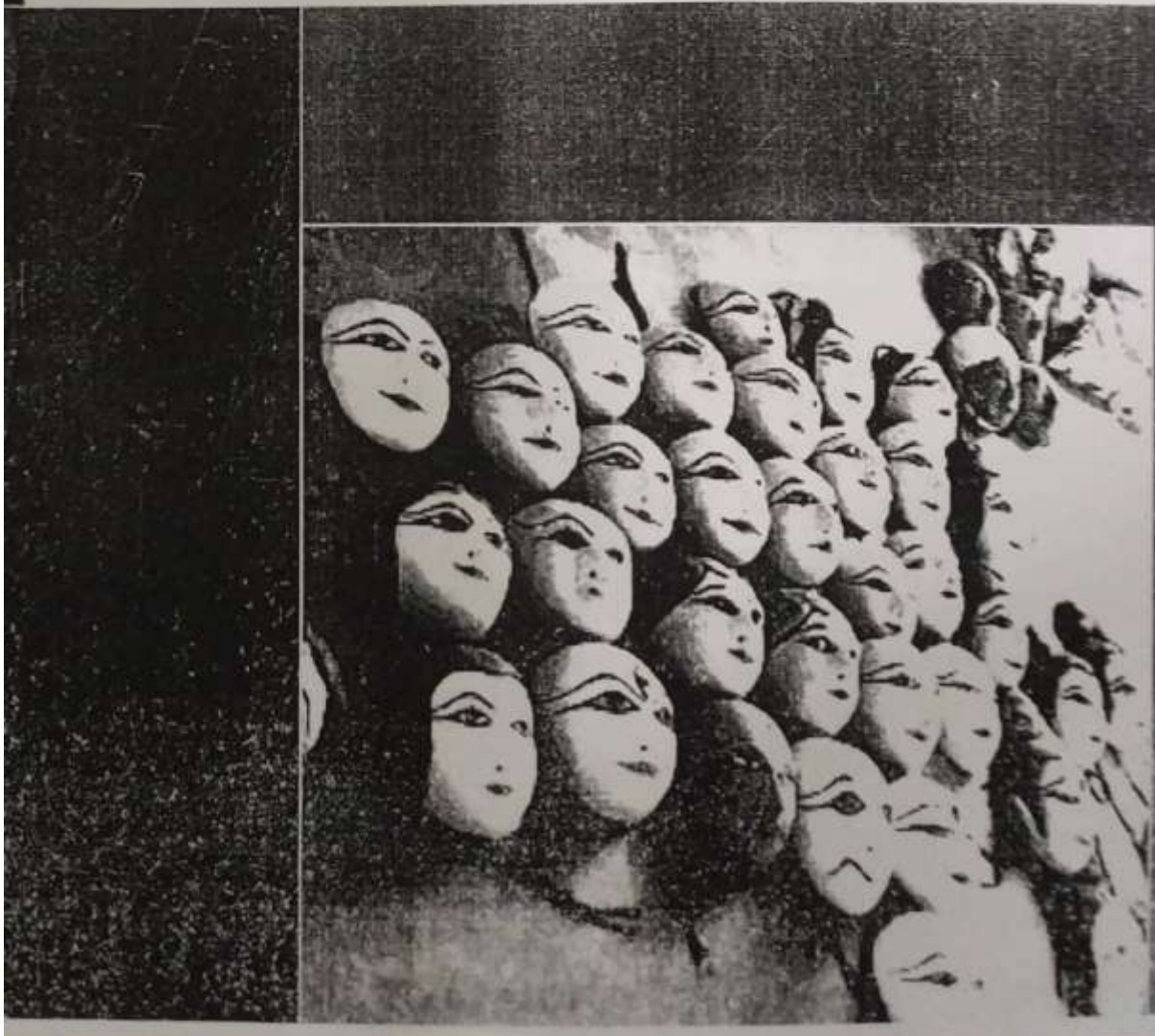


लोक साहित्य विविध रूप एवं विविध परिदृश्य

सम्पादक

प्रो. अशोक सिंह ■ डॉ. सुरेन्द्र पाण्डेय



विषय-सूची

1.	लोक संस्कृति की सुवास : छत्तीसगढ़ डॉ० शीला दानी	1-7
2.	लोक साहित्य का महत्व डॉ० शैलेन्द्र कुमार सिंह	8-15
3.	लोक साहित्य का मूलाधार भोजपुरी संस्कृति डॉ० चम्पा सिंह	16-25
4.	लोक साहित्य एक परिचय डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय	26-35
5.	उत्तराखण्ड का लोक साहित्य प्रो० अशोक सिंह	36-51
6.	भोजपुरी लोक संस्कृति प्रो० तीर्थेश्वर सिंह	52-61
7.	लोक संस्कृति : एक अध्ययन डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह	62-70
8.	लोक जीवन का आख्यान : लोक साहित्य डॉ० अरविन्द कुमार	71-85
9.	भोजपुरी लोक साहित्य में लोक संस्कृति दिनेश कुमार यादव	86-92
10.	लोकगीतों में स्त्री क्रंदन डॉ० अफरोज बेगम	93-102
11.	लोकसाहित्य के विकास में लोककवि घाघ का योगदान डॉ० महेश सिंह यादव	103-108
12.	भोजपुरी भाषा और लोक साहित्य डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय	109-114
13.	साहित्य के संवर्धन में लोक साहित्य का योगदान डॉ० विकास कुमार	115-121
14.	लोकगीत परंपरा, परिभाषा और भेद डॉ० संतोष पाण्डेय	122-124

लोकगीतों में स्त्री क्रंदन

डॉ० अफरोज बेगम*

इतिहास और स्मृतियों को खंगालने के क्रम में आज मानविकी विमर्श इस बिन्दु पर पहुँचा है, जहाँ से शब्दों में दूरागत या दफन हो चुकी ध्वनियों को सुना जा सके और उनको नयी अर्थ-छवियों में स्थापित किया जा सके। हिन्दी साहित्य में भी लोकगीतों और उनमें अभिव्यक्त शाब्दिक अर्थ-छवियों के माध्यम से झाँकते चेहरों की गतियों, स्थितियों, प्रसन्नताओं को पढ़ने का प्रयास हो रहा है। लोकगीतों में स्त्री जीवन के चित्र उकेरने के बहाने से स्त्री जीवन के संघर्ष, हर्ष, पीड़ा तथा ग्रामीण परिवेश की आदिवासी स्त्री, दलित स्त्री के जीवन के प्रत्येक पहलुओं से हम साक्षात्कार कर सकेंगे।

पुरुष सत्ता के वर्चस्व से विशृंखलित एवं सदियों के बंधनों से विगलित स्त्रियों ने लोकगीतों के माध्यम से ही आत्मरचना का प्रयास किया था। सत्य में लोकगीत ही अपेक्षाकृत वह परिसर रहा है, जहाँ स्त्रियाँ पुरुष सत्ता संदर्भों से आरोपित या आत्मआरोपित रुढ़ियों एवं जकड़बंदियों से परे जाकर आत्म-साक्षात्कार कर सकती थी। लोकगीत स्त्रियों के नैसर्गिक प्रज्ञा का वह क्षेत्र रहा है, जहाँ कोमल हास-परिहास का भी वे एक रणनीति के तहत उपयोग करती रही हैं, आज से नहीं आदिकाल से। यह बात अलग है कि उनकी वाचिक परम्परा भी कोई अपना संकलनकर्ता, कोई अपना व्यास नहीं मिला। जो कुछ सुरक्षित रह सका वह केवल धर्म के आश्रय से, धर्मनिरपेक्ष सारी चीजें संतरणशील रहीं।'

लोकगीत ही एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण परिवेश की स्त्रियाँ अपनी व्यथा-कथा को, अपने हर्ष-उल्लास को, अपनी भाषा-संस्कृति को, अपने

अफरोज बेगम

* असि०प्रो०, हिन्दी विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर वि०वि० सागर (म०प्र०)